SANJEEV NEWAR

Discover Hinduism

हिन्दू धर्म में नारी की महिमा

BEYOND FLESH THERE LIES A HUMAN BEING

NOW IN HINDI

नारी का कीर्तिगान, वैदिक ऋचाओं में...

Agniveer

www.agniveer.com

हिन्दू धर्म में नारी की महिमा

कॉपीराइट © २०१६ अग्निवीर

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक को सम्पूर्ण या आंशिक रूप से प्रकाशक की पूर्व में लिखित अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या यान्त्रिक या लिखित या प्रतिलिपि के द्वारा या रिकार्डिंग से या अन्य किसी भी माध्यम से और किसी भी स्वरुप में संग्रहित या प्रसारित नहीं किया जा सकेगा।

यह पुस्तक प्रस्तुत विषय वस्तु की प्रामाणिक और अधिकृत जानकारी देने के लिए बनाई गई है।

जानकारी के लिए संपर्क करें

books@agniveer.com

पुस्तक आकार एवं संयोजन – रोनक त्रिवेदी

प्रथम संस्करण : फ़रवरी २०१६

हिन्दू धर्म में नारी की महिमा

नारी का कीर्तिगान, वैदिक ऋचाओं में...

: लेखक :

संजीव नेवर

: अनुवाद :

मृदुला

अनुवादक की कलम से

'हिन्दू धर्म को जानें' – हिन्दू धर्म पर समग्रता से प्रकाश ड़ालती यह श्रृंखला अग्निवीर का एक उपक्रम है। इसी के तहत 'हिन्दू धर्म में नारी की महिमा' - Glory Of Women In Hinduism का हिन्दी अनुवाद - पुस्तक प्रस्तुत की गई है। इसके प्रबुद्ध लेख़क संजीव नेवर हैं। उन्होंने बड़ी ही कुशलता से, बुद्धिमत्ता से, तर्क और प्रमाण देते हुए –हिन्दू धर्म में नारी के सच्चे स्वरुप को उभारा है।

आज विश्व में नारी की छवि मुख्य रूप से केवल कामनापूर्ति की वस्तु, उपभोग की वस्तु, शारीरिक सुन्दरता का मापदण्ड, मनोरंजन का साधन इत्यादि बन गई है। आधुनिकता के नाम पर स्त्रियों का फूहड़ प्रदर्शन करने की होड़ लगी हुई है। बॉलीवुड और ग्लैमर इंडस्ट्री ने इस आग़ में घी का काम किया है। परिणामतः समाज में स्त्रियों के सम्मान में कमी आई है। स्त्रियों पर अत्याचार, छेड़खानी की घटनाएं और बलात्कार के आंकडे दिन -प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं।

दूसरी तरफ़ झूठे जाली ग्रंथों के हवालों से हिन्दू धर्म में स्त्रियों की दशा को अत्यंत पिछड़ा हुआ, गिरा हुआ और दुय्यम दर्जे का दिखाने का प्रयास किया जा रहा है, और विधर्मी वायरस भी इसका फ़ायदा उठा रहे हैं।

इन सभी समस्याओं की औषधी इस पुस्तक में है। यह पुस्तक हिन्दू धर्म में स्त्रियों की असली छवि का दर्पण दिखाती है। आजकल की लड़कियों को भी जिसे निहारने की अत्यंत जरुरत है। ताकि वे – वेद भगवान (हिन्दू धर्म का आदिस्रोत) द्वारा स्त्रियों को प्रदत्त सर्वोच्च स्थान को देखें, जानें और अपने आचरण में लाएं तथा अपने शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास को उच्चतम सोपान तक ले जा सकें।

यह पुस्तक सभी के लिए पठनीय है। युवा वर्ग में इसका अत्यंत प्रसार किए जाने की आवश्यकता है। मैं इसके अनुवादक के रूप में स्वयं को गौ-रवान्वित महसूस करती हूं और पाठकों से इसका अधिक से अधिक प्रचार – प्रसार करने का अनुरोध करती हूं।

अतिशीघ्र ही हम अपने पुरुषार्थ से समाज में स्त्रियों को उनका सच्चा स्थान दिलवाएं!

मृदुला

०८ मार्च २०१६, पुणे

भूमिका

हिन्दू धर्म के अंतस में स्त्रियों को सर्वोच्च स्थान देने वाली दो अवधारणाएं समाहित हैं –

- 'मातृवत् परदारेषु' अर्थात् सभी स्त्रियां माता समान आदर के योग्य हैं।
- जिस समाज में स्त्रियों को आदर और सम्मान नहीं मिलता, उस समाज को असफलताओं और दु:खों का सामना करना पड़ता है।

हिन्दू धर्म स्त्रियों का गुणगान करते हुए, उन्हें सरस्वती – ज्ञान का स्रोत, सहस्त्रवीर्या – शौर्य और धैर्य की प्रतिमान तथा उषा – ज्ञान से आलोकित करने वाली और आशा की पहली किरण कहता है।

वेदों की इन उदात्त शिक्षाओं के बावजूद, हिन्दू धर्म द्वेषी अपनी सारी शक्ति और समय, विभिन्न हिन्दू ग्रन्थ जैसे – रामायण, महाभारत, पुराण, मनुस्मृति इत्यादि से स्त्रियों को निन्दित करने वाले अंश खोजने में गंवाते हैं। मैंने इसे "समय और शक्ति को गंवाना" इसलिए कहा क्योंकि वेदों के आलावा, इन में से कोई भी ग्रन्थ, हिन्दू धर्म का मूलाधार नहीं है। हमारे महान ऋषियों द्वारा निर्मित ये ग्रन्थ, अपने निर्माण काल से ही प्रक्षेपण (मिलावट) का शिकार होते रहे हैं। अतः इन में से कोई भी ग्रन्थ हिन्दू धर्म का प्रामाण्य ग्रन्थ नहीं माना जा सकता। केवल वेद ही हिन्दू धर्म के प्रामाण्य ग्रन्थ कहे जा सकते हैं। इसलिए हिन्दू धर्म से द्वेष करने वाले यदि हिन्दू धर्म को बदनाम करने के लिए इन ग्रंथों से प्रमाण प्रस्तुत करते हैं तो यह उनके अज्ञान का ही नमूना है।

विडम्बना यह है कि हिन्दुओं को स्त्री विरोधी कह कर कोसने वाले यह लोग बड़ी शान से अपनी जमात में स्त्रियों को मर्दों से आधी अक्ल वाला मानते हैं। साथ ही उनकी जमात में स्त्रियों को घर, परिवार और समाज में बराबरी का कोई अधिकार भी प्राप्त नहीं है। इन हिन्दू द्वेषी लोगों में तथाकथित "आधुनिकतावादी" लोगों का भी एक वर्ग है जो पश्चिमी विचारधारा से प्रभावित है। यह स्त्रियों को आदर-सम्मान देने की बातें तो करते

हैं पर असल में उन्हें ग्लैमर इंडस्ट्री का हिस्सा बनने को उकसाते हैं, ताकि स्त्रियां उनके “मनोरंजन” का साधन बनी रहें।

हिंदुत्व विरोधियों का मुंह बंद करने वाली यह पुस्तक वर्षों तक वेदों के गहन अध्ययन के बाद बनी है। यह पुस्तक “हिन्दू धर्म को जानें” इस शृंखला की एक कड़ी है।

हालांकि, इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य मात्र हिन्दू विरोधियों का मुंह बंद करना ही नहीं है, बल्कि विश्व को मानवता की शाश्वत धरोहर – हिन्दू धर्म में स्त्रियों को प्राप्त उच्च स्थान से परिचित कराना भी है। और इससे भी महत्वपूर्ण उद्देश्य है कि स्त्रियों को उनकी सही क्षमताओं – उनका चरित्र, उनके विशेष गुण, उनकी करुणा, उनका दायित्व, अन्यों का ध्यान रखने की उनकी विशेषता, उनका ज्ञान और उनकी वीरता से अवगत करवाना, जिससे वे अपना जीवन इन गुणों के अनुरूप ढ़ाल सकें।

इस पुस्तक से प्राप्त होने वाली धनराशी का उपयोग स्त्रियों के सशक्तीकरण में किया जायेगा।

मृदुला

०८ मार्च २०१६, पुणे

विषय सूची

अनुवादक की कलम से I
भूमिका III
हिन्दू धर्म में नारी 1
अथर्ववेद के मन्त्र 2
ऋग्वेद के मन्त्र 5
यजुर्वेद के मन्त्र 8
नारी - ज्ञान की आधारशिला 9
नारी और यज्ञ 11
नारी और शिक्षा 12
सुशिक्षित नारी की क्षमता 14
नारी – अदम्य साहस की प्रतिमा 18
स्त्रियों के शौर्य की महिमा गाते वेद मन्त्र 19
नारी – ज्ञान का अरुणोदय 24
ऋग्वेद के मन्त्र 25
सारांश 27
मां – स्त्री का असली रूप 28
स्त्री का सच्चा सम्मान 29
वेद मन्त्रों में मां की गरिमा 30
सारांश 34
मनुस्मृति और स्त्री 35

स्त्री – समृद्धि की दाता 36
स्त्रियों की प्रसन्नता आवश्यक है 37
बहुविवाह पाप है.. 39
स्त्रियों के स्वाधिकार 39
स्त्रियों की सुरक्षा... 40
स्त्री और विवाह 41
संपत्ति में अधिकार 42
दहेज़ का निषेध 43
स्त्रियों को पीड़ित करने पर अत्यंत कठोर दण्ड 43
स्त्रियों को प्राथमिकता 44
सन्दर्भ सूची.. 45
संजीव नेवर – एक परिचय... 46
अग्निवीर - एक परिचय... 49

अध्याय १

हिन्दू धर्म में नारी

यदि हम स्त्रियों को सम्मान नहीं देंगे, तो नियति भी हमारा सम्मान नहीं करेगी।

-अग्निवीर

हिन्दू धर्म का मूलाधार वेद हैं और वेद नारी को सर्वोच्च सम्मान प्रदान करते हैं। विश्व का अन्य कोई भी सम्प्रदाय, कोई भी अन्य दर्शन और आजकल के आधुनिक स्त्रीवादी भी इस उच्चता तक पहुँच नहीं पाए हैं।

तथापि, जिन्होनें वेदों के दर्शन भी नहीं किए, ऐसे कुछ रीढ़ की हड्डी विहीन बुद्धिवादियों-साम्यवादियों ने इस देश की सभ्यता, संस्कृति को नष्ट– भ्रष्ट करने का जो अभियान चला रखा है, उसके तहत वेदों में नारी की अवमानना का ढ़ोल पीटते रहते हैं। उनके इन निराधार आरोपों का उत्तर देने के लिए, आइए वेदों में नारी के स्वरुप की झलक देखें –

अथर्ववेद के मन्त्र

अथर्ववेद ११।५।१८

ब्रह्मचर्य सूक्त के इस मंत्र में कन्याओं के लिए भी ब्रह्मचर्य और विद्या ग्रहण करने के बाद ही विवाह करने के लिए कहा गया है। यह सूक्त लड़कों के समान ही कन्याओं की शिक्षा को भी विशेष महत्त्व देता है।

कन्याएं ब्रह्मचर्य के सेवन से पूर्ण विदुषी और युवती होकर ही विवाह करें।

अथर्ववेद १४।१।६

माता- पिता अपनी कन्या को पति के घर जाते समय बुद्धिमत्ता और विद्याबल का उपहार दें। वे उसे ज्ञान का दहेज़ दें।

जब कन्याएं बाहरी उपकरणों को छोड़ कर, भीतरी विद्या बल से चैतन्य स्वभाव और पदार्थों को दिव्य दृष्टि से देखने वाली और आकाश और भूमि से सुवर्ण आदि प्राप्त करने – कराने वाली हों तब सुयोग्य पति से विवाह करें।

अथर्ववेद १४।१।२०

हे पत्नी! हमें ज्ञान का उपदेश कर। वधू अपनी विद्वत्ता और शुभ गुणों से पति के घर में सब को प्रसन्न कर दे।

अथर्ववेद ७।४६।३

पति को संपत्ति कमाने के तरीके बता। संतानों को पालने वाली, निश्चित ज्ञान वाली, सहस्रों स्तुति वाली और चारों ओर प्रभाव डालने वाली स्त्री, तुम ऐश्वर्य पाती हो। हे सुयोग्य पति की पत्नी, अपने पति को संपत्ति के लिए आगे बढ़ाओ।

अथर्ववेद ७।४७।१

हे स्त्री! तुम सभी कर्मों को जानती हो।

हे स्त्री! तुम हमें ऐश्वर्य और समृद्धि दो।

अथर्ववेद ७।४७।२

तुम सब कुछ जानने वाली हमें धन–धान्य से समर्थ कर दो। हे स्त्री! तुम हमारे धन और समृद्धि को बढ़ाओ।

अथर्ववेद ७।४८।२

तुम हमें बुद्धि से धन दो।

विदुषी, सम्माननीय, विचारशील, प्रसन्नचित्त पत्नी संपत्ति की रक्षा और वृद्धि करती है और घर में सुख़ लाती है।

अथर्ववेद १४।१।६४

हे स्त्री! तुम हमारे घर की प्रत्येक दिशा में ब्रह्म अर्थात् वैदिक ज्ञान का प्रयोग करो।

हे वधू! विद्वानों के घर में पहुंच कर कल्याणकारिणी और सुखदायिनी होकर तुम विराजमान हो।

अथर्ववेद २।३६।५

हे वधू! तुम ऐश्वर्य की नौका पर चढ़ो और अपने पति को जो कि तुमने स्वयं पसंद किया है, संसार- सागर के पार पहुंचा दो।

हे वधू! ऐश्वर्य की अटूट नाव पर चढ़ और अपने पति को सफ़लता के तट पर ले चल।

अथर्ववेद १।१४।३

हे वर! यह वधू तुम्हारे कुल की रक्षा करने वाली है।

हे वर! यह वधू तुम्हारे कुल की रक्षक है। यह बहुत काल तक तुम्हारे घर में निवास करे और बुद्धिमत्ता के बीज बोये।

अथर्ववेद २।३६।३

यह वधू पति के घर जा कर रानी बने और वहां प्रकाशित हो।

अथर्ववेद ११।१।१७

ये स्त्रियां शुद्ध, पवित्र और यज्ञीय(यज्ञ समान पूजनीय) हैं, ये प्रजा, पशु और अन्न देती हैं।

यह स्त्रियां शुद्ध स्वभाव वाली, पवित्र आचरण वाली, पूजनीय, सेवा योग्य, शुभ चरित्र वाली और विद्वत्तापूर्ण हैं। यह समाज को प्रजा, पशु और सुख़ पहुँचाती हैं।

अथर्ववेद १२।१।२५

हे मातृभूमि! कन्याओं में जो तेज होता है, वह हमें दो।

स्त्रियों में जो सेवनीय ऐश्वर्य और कांति है, हे भूमि! उस के साथ हमें भी मिला।

अथर्ववेद १२।२।३१

स्त्रियां कभी दुख से रोयें नहीं, इन्हें निरोग रखा जाए और रत्न, आभूषण इत्यादि पहनने को दिए जाएं।

अथर्ववेद १४।१।२०

हे वधू! तुम पति के घर में जा कर गृहपत्नी और सब को वश में रखने वाली बनो।

अथर्ववेद १४।१।५०

हे पत्नी! अपने सौभाग्य के लिए मैं तेरा हाथ पकड़ता हूं।

अथर्ववेद १४।२।२६

हे वधू! तुम कल्याण करने वाली हो और घरों को उद्देश्य तक पहुंचाने

वाली हो।

अथर्ववेद १४।२।७१

हे पत्नी! मैं ज्ञानवान हूं तू भी ज्ञानवती है, मैं सामवेद हूं तो तू ऋग्वेद है।

अथर्ववेद १४।२।७४

यह वधू विराट अर्थात् चमकने वाली है, इस ने सब को जीत लिया है। यह वधू बड़े ऐश्वर्य वाली और पुरुषार्थिनी हो।

अथर्ववेद ७।३८।४ और १२।३।५२

सभा और समिति में जा कर स्त्रियां भाग लें और अपने विचार प्रकट करें।

ऋग्वेद के मन्त्र

ऋग्वेद १०।८५।७

माता- पिता अपनी कन्या को पति के घर जाते समय बुद्धिमत्ता और विद्याबल उपहार में दें। माता- पिता को चाहिए कि वे अपनी कन्या को दहेज़ भी दें तो वह ज्ञान का दहेज़ हो।

ऋग्वेद ३।३१।१

पुत्रों की ही भांति पुत्री भी अपने पिता की संपत्ति में समान रूप से उत्तराधिकारी है।

ऋग्वेद १०।१।५९

एक गृहपत्नी प्रात:काल उठते ही अपने उद्गार कहती है –

"यह सूर्य उदय हुआ है, इस के साथ ही मेरा सौभाग्य भी ऊँचा चढ़ निकला है। मैं अपने घर और समाज की ध्वजा हूं, उस की मस्तक हूं। मैं भारी व्याखात्री हूं। मेरे पुत्र शत्रु -विजयी हैं। मेरी पुत्री संसार में चमकती

है। मैं स्वयं दुश्मनों को जीतने वाली हूं। मेरे पति का असीम यश है। मैंने वह त्याग किया है जिससे इन्द्र (सम्राट) विजय पाता है। मुझे भी विजय मिली है। मैंने अपने शत्रु नि:शेष कर दिए हैं।"

वह सूर्य ऊपर आ गया है और मेरा सौभाग्य भी ऊँचा हो गया है। मैं जानती हूं, अपने प्रतिस्पर्धियों को जीतकर मैंने पति के प्रेम को फ़िर से पा लिया है।

मैं प्रतीक हूं, मैं शिर हूं, मैं सबसे प्रमुख हूं और अब मैं कहती हूं कि मेरी इच्छा के अनुसार ही मेरा पति आचरण करे। प्रतिस्पर्धी मेरा कोई नहीं है।

मेरे पुत्र मेरे शत्रुओं को नष्ट करने वाले हैं, मेरी पुत्री रानी है, मैं विजयशील हूं। मेरे और मेरे पति के प्रेम की व्यापक प्रसिद्धि है।

ओ प्रबुद्ध! मैंने उस अर्ध्य को अर्पण किया है, जो सबसे अधिक उदाहरणीय है और इस तरह मैं सबसे अधिक प्रसिद्ध और सामर्थ्यवान हो गई हूं। मैंने स्वयं को अपने प्रतिस्पर्धियों से मुक्त कर लिया है।

मैं प्रतिस्पर्धियों से मुक्त हो कर, अब प्रतिस्पर्धियों की विध्वंसक हूं और विजेता हूं। मैंने दूसरों का वैभव ऐसे हर लिया है जैसे कि वह न टिक पाने वाले कमजोर बांध हों। मैंने मेरे प्रतिस्पर्धियों पर विजय प्राप्त कर ली है। जिससे मैं इस नायक और उस की प्रजा पर यथेष्ट शासन चला सकती हूं।

इस मंत्र की ऋषिका और देवता दोनों हो शची हैं। शची इन्द्राणी है, शची स्वयं में राज्य की सम्राज्ञी है (जैसे कि कोई महिला प्रधानमंत्री या राष्ट्राध्यक्ष हो)। उस के पुत्र–पुत्री भी राज्य के लिए समर्पित हैं।

ऋग्वेद १।१६४।४१

ऐसे निर्मल मन वाली स्त्री जिसका मन एक पारदर्शी स्फटिक जैसे परिशुद्ध जल की तरह हो वह एक वेद, दो वेद या चार वेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद, अर्थवेद इत्यादि के साथ ही छ : वेदांगों – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छंद को प्राप्त करे और इस वैविध्यपूर्ण ज्ञान को अन्यों को भी दे।

हे स्त्री पुरुषों! जो एक वेद का अभ्यास करने वाली वा दो वेद जिसने अभ्यास किए वा चार वेदों की पढ़ने वाली वा चार वेद और चार उपवेदों की शिक्षा से युक्त वा चार वेद, चार उपवेद और व्याकरण आदि शिक्षा युक्त, अतिशय कर के विद्याओं में प्रसिद्ध होती और असंख्यात अक्षरों वाली होती हुई सब से उत्तम, आकाश के समान व्याप्त निश्चल परमात्मा के निमित्त प्रयत्न करती है और गौ स्वर्ण युक्त विदुषी स्त्रियों को शब्द कराती अर्थात् जल के समान निर्मल वचनों को छांटती अर्थात् अविद्यादी दोषों को अलग करती हुई वह संसार के लिए अत्यंत सुख करने वाली होती है।

ऋग्वेद १०।८५।४६

इसी तरह बहुत से मन्त्रों में स्त्री को परिवार और पत्नी की महत्वपूर्ण भूमिका में चित्रित किया गया है। साथ ही वेद स्त्री की सामाजिक, प्रशासकीय और राष्ट्र की सम्राज्ञी के रूप का वर्णन भी करते है।

ऋग्वेद के कई सूक्त उषा का देवता के रूप में वर्णन करते हैं और इस उषा को एक आदर्श स्त्री के रूप में माना गया है।

सारांश में –

- स्त्रियां वीर हों।
- स्त्रियां सुविज्ञ हों।
- स्त्रियां यशस्वी हों।
- स्त्रियां रथ पर सवारी करें।
- स्त्रियां विदुषी हों।
- स्त्रियां संपदा शाली और धनाढ्य हों।
- स्त्रियां बुद्धिमती और ज्ञानवती हों।
- स्त्रियां परिवार ,समाज की रक्षक हों और सेना में जाएं।

- स्त्रियां तेजोमयी हों।
- स्त्रियां धन-धान्य और वैभव देने वाली हों।

यजुर्वेद के मन्त्र

यजुर्वेद २०।९

स्त्री और पुरुष दोनों को शासक चुने जाने का समान अधिकार है।

यजुर्वेद १७।४५

स्त्रियों की भी सेना हो। स्त्रियों को युद्ध में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।

यजुर्वेद १०।२६

शासकों की स्त्रियां अन्यों को राजनीति की शिक्षा दें। जैसे राजा, लोगों का न्याय करते हैं वैसे ही रानी भी न्याय करने वाली हों।

अध्याय -२

नारी - ज्ञान की आधारशिला

यदि मां न होती तो ईश्वर के किसी भी प्रारूप का अस्तित्व नहीं होता।

-अग्निवीर

वेदों का नज़रिया नारी के प्रति बहुत ही साफ़ और सुस्पष्ट है – नारी समाज की आधारशिला है। यदि किसी समाज को विनष्ट करना हो तो पहले वहां की स्त्रियों की शिक्षा, उनके मान-सम्मान, उनके रुतबे को समाप्त करना होगा। इसके विपरीत यदि किसी श्रेष्ठ समाज का निर्माण करना हो तो वहां स्त्रियों को सर्वोच्च सम्मान देना होगा और साथ ही उन्हें ज्ञान, गौरव और नेतृत्व से युक्त करना होगा।

हमारे राष्ट्र और समाज के दुर्भाग्य की शुरुआत तब से हुई जब से हमने स्त्रियों को 'वस्तु' मानना शुरू किया – चाहे वासनापूर्ति की वस्तु या फिर दासी के रूप में काम-काज करने की वस्तु। यह सब एक ही दिन में नहीं

हुआ, स्त्रियों की यह दुर्दशा महाभारत से एक हजार वर्ष पहले ही आरंभ हो गई थी। परन्तु मध्यकाल में मुस्लिम आक्रान्ताओं के आने के बाद स्थिति और अधिक बिगड़ती गई और हमारा समाज और अधिक कमजोर, ड़रपोक, शक्तिहीन, उत्पीड़ित होता हुआ बिख़रता चला गया। स्त्रियों के प्रति वेदों के आदेश की अवहेलना करने की हमें बहुत बड़ी किमत चुकानी पड़ी है। हम इतने बुद्धिहीन हो गए हैं कि हमने धर्म के नाम पर हर किसी ऐरे-गैरे को यह अधिकार दे दिया है कि वह स्त्रियों के वेद पढ़ने पर पाबन्दी लगाता फ़िरे।

यह बहुत ही शर्मनाक है कि ऐसे मूर्ख, वेदों के विरोधी मानसिकता वाले लोग स्वयं को हिन्दूधर्म का या हिन्दुत्व का या वैदिक धर्म का प्रतिनिधि बताते हैं और बहुत से लोग आंखे मूंदकर उनका विश्वास और सम्मान भी करते हैं, इससे हमारे समाज में पाखंड बढ़ता जा रहा है। अग्निवीर स्पष्टता से यह घोषणा करता है कि ऐसे सभी लोग और ऐसे सभी ग्रन्थ जो स्त्रियों के वेद पढ़ने पर पाबन्दी का समर्थन करते हैं और उनके लिए पुरुषों से निम्न स्तर के अधिकारों का प्रावधान करते हैं, वे सभी हिन्दू धर्म के सबसे बड़े शत्रु हैं!

स्त्रियों के दमन का पाठ हमने वेदों से नहीं बल्कि उन दरिन्दे आक्रान्ताओं से सीखा जिन्होंने हम पर अनगिनत अत्याचार किये, हमें लूटा, हमें गुलाम बनाया भले ही वे मध्य एशिया के तथाकथित इस्लाम का प्रतिनिधित्व करने वाली बर्बर जातियां हों या तथाकथित ईसाइयत का प्रतिनिधित्व करते अंग्रेज हों। और इस में उन ज़ाली ग्रंथों का भी बहुत बड़ा हाथ है जिनका उद्देश्य ही हमें वेदों से विमुख़ करना था। हम यह नहीं जानते कि कब से और कब तक यह ग्रन्थ लिखे जाते रहे। (कुछ का लिखना १९ वीं सदी में छपाई के आने तक जारी था।) पर हमारा यह दृढ़ मत है कि कोई भी ग्रन्थ जो स्त्रियों को अपमानित करता हो या उन्हें कमतर अधिकार प्रदान करता हो या समाज में उनके नेतृत्व पर पाबन्दी लगाता हो, वह कूड़े-दानी में फेंक देने योग्य है या फ़िर उसके प्रक्षेपित अंश निकाल कर वेदानुकूल अर्थ किये जाने चाहिए। सत्य धर्म को जानने के लिए अब हमें वेदों की ओर लौटना ही होगा।

इस अध्याय में हम इस मिथक को समाप्त करेंगे कि स्त्रियों को वेद पढ़ने

और यज्ञ करने का अधिकार नहीं है और हम यह भी देखेंगे कि वेद विदुषी नारी के बारे में क्या कहते हैं-

नारी और यज्ञ

ऋग्वेद १।१४६।३

यजमान (यज्ञ का कर्ता) और उसकी पत्नी दो गौएँ हैं और यज्ञ की अग्नि बछडा है।

ऋग्वेद १।७२।५

ज्ञानी जन अपनी पत्नियों के साथ यज्ञ कर कल्याण को प्राप्त होते हैं।

ऋग्वेद २।६।५

यदि माता और बहन साथ यज्ञ करें, तो आनंद की वर्षा होती है।

ऋग्वेद ७।१।६।

युवती 'हवि' लेकर यज्ञ के समीप जाती है।

अथर्ववेद ३।२८।६

हे पत्नी! तुम यज्ञ लोक में प्रविष्ट हुई हो।

अथर्ववेद ३।३०।६

परिवार के सभी सदस्य मिलकर अग्निहोत्र करें।

अथर्ववेद १४।२।१८

हे वधू! तुम गृहस्थ आश्रम में अग्निहोत्र करने वाली होओ।

अथर्ववेद १४।२।२५

हे स्त्री! आनंदपूर्वक अग्निहोत्र किया कर।

नारी को यज्ञ करने से रोकने वाला एक भी मन्त्र वेदों में नहीं है।

कृपया ध्यान दें कि 'यज्ञ' का अर्थ यहाँ केवल 'अग्निहोत्र' या 'हवन' ही नहीं है, बल्कि सभी श्रेष्ठ कर्म भी यज्ञ कहे गए हैं, वेदों के अनुसार किसी अच्छे कर्म को करने के लिए स्त्री-पुरुष या जाति का भेद नहीं है।

और जब स्त्रियों को यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त है तो उन्हें वेद मन्त्रों के उच्चारण से कौन रोक सकता है?

मध्यकाल में स्त्रियों को वेद पढ़ने और यज्ञ करने के अधिकार से वंचित किया गया जो कि हमारे समाज के दुर्भाग्य और दासता का काल रहा है।

यह बहुत लज्जास्पद है कि हिन्दुत्व के कई माननीय प्रतिनिधि अब भी इन दूषित मान्यताओं का समर्थन करते हैं पर आधुनिक युग के महान सुधारक ऋषि दयानन्द का धन्यवाद है कि उन्होंने वेदों के सत्य अर्थ को समाज के सामने रखा। उन्हीं की कृपा से आज हम मंदिरों में भी स्त्रियों द्वारा उच्चारित गायत्री मन्त्र सुन पाते हैं।

हिन्दुत्व के प्रतिनिधि फिर वो आजकल के शंकराचार्य हों या कोई महंत या फ़िर संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित – यदि वे स्त्रियों को अनुष्ठान करने, वेद मन्त्रों का उच्चारण करने और 'अग्निहोत्र' करने का अधिकार देने में जरा भी आनाकानी करते हैं तो वे मूर्ख, अज्ञानी और दकियानूसी हैं और उन्हें धर्म का शत्रु ही माना जाए। ये लोग उसी प्रकार त्याज्य हैं, जैसे 'मणि' होने के बावजूद भी लोग सर्प से दूर ही रहते हैं।

नारी और शिक्षा

ऋषि दयानन्द तो कहते हैं कि जो माता-पिता अपने बालक-बालिकाओं को पढ़ने न भेजते हों – उन्हें शासन की ओर से दण्डित किया जाना चाहिए।

स्त्रियों के शिक्षण का महत्व बताने वाले कुछ मन्त्र-

ऋग्वेद ६।४४।१८

शासन यह सुनिश्चित करे कि सभी बालक और बालिकाओं को अच्छी

शिक्षा मिले। वे ब्रह्मचर्य से युक्त होकर समाज को सशक्त बनाएं।

यजुर्वेद १०।७

शासन को सभी स्त्रियों को अच्छी शिक्षा देने का विशेष प्रबंध करना चाहिए।

ऋग्वेद ३।१।२३

बुद्धिमान लोग यह सुनिश्चित करें कि सभी बालक और बालिकाएं विद्वान बनें।

ऋग्वेद २।४१।१६

सभी बालिकाएं विदुषी स्त्रियों से विद्या प्राप्त करें।

यजुर्वेद ११।३६

माता-पिता को बच्चों की अच्छी शिक्षा का प्रबन्ध सुनिश्चित करना चाहिए। उनको विद्वानों के पास दीर्घ काल तक भेजना चाहिए, ताकि सूर्य की भान्ति वे अपने परिवारों और देश को प्रबुद्ध कर सकें।

ऋग्वेद १।१५२।६

जैसे माताएं अपने बच्चों का दूध से पोषण करती हैं, वैसे विद्वान् जन बालक और बालिकाओं का विद्या और ज्ञान से विकास करें।

यजुर्वेद ६।१४

आचार्यों को चाहिए कि अपने छात्र और छात्राओं को वेद की शिक्षाओं से पल्लवित करके उनके उत्तम गुणों का विकास करें।

ऋग्वेद २।४१।१७

विद्वान जन अपनी विदुषी स्त्रियों के प्रति उपदेश करें कि वो अन्य सभी कन्याओं को शिक्षित करें।

यजुर्वेद ३४।४०

जैसे प्रभातवेला सबके लिए आनंद लाती है, वैसे विदुषी स्त्रियां कन्याओं को सुशिक्षित कर आनन्द फैलाएं।

यजुर्वेद २०।८५

विदुषी स्त्रियों को चाहिए कि वे अन्य स्त्रियों को सुशिक्षित कर उन्हें भी विदुषी बनाएं।

ऋग्वेद १।११७।२४

आचार्यों को चाहिए कि वे बालक और बालिकाओं को श्रेष्ठ जीवन मूल्यों से शिक्षित कर समय पर उनके माता-पिता को वापस लौटा दें।

ऋग्वेद १।१६४।४१

जो स्त्री समस्त वेदों को पढ़ के पढ़ाती है, वह संसार के लिए अत्यन्त सुख देनेवाली होती है।

ऋग्वेद ७।४०।७

श्रेष्ठ गुणों से युक्त विदुषी स्त्री सब स्त्रियों को पढ़ाये और सर्वत्र आनंद फैलाए।

सुशिक्षित नारी की क्षमता

सुशिक्षित नारी अपने समाज को विश्व में उन्नति के शिख़र पर ले जाने की क्षमता रखती है, वह इतिहास को उलटने की क्षमता रखती है। वह सरस्वती है – ज्ञान का स्रोत। आइये देखें, वेद शिक्षित नारियों के बारे में क्या कह रहे हैं-

यजुर्वेद २०।८४

विदुषी स्त्री हमारे जीवन को अपनी मेधा बुद्धि से पवित्र करती है। अपने कर्मों से वह हमारे कर्मों को शुद्ध करती है। उसका ज्ञान और कर्म सद्गुणों

की वृद्धि कर समाज को सुव्यवस्थित करता है।

यजुर्वेद २०।८५

विदुषी स्त्री हमें ज्ञान की ओर प्रेरित करती है। वह समाज में उत्तम कर्मों को बढ़ावा देती है।

यजुर्वेद २०।८६

विदुषी स्त्रियां ज्ञान से प्राप्त होनेवाले आनंद से हमारा परिचय कराती हैं। वे हमारे ज्ञान, कर्म और उपासना को प्रबुद्ध करती हैं।

ऋग्वेद १।१६४।४९

हे विदुषी स्त्री! तुम्हारा ज्ञान हमें सुख और शांति देता है। तुम हमें उत्तम गुणों को धारण करने के लिए प्रेरित करती हो। तुम अपने ज्ञान से हमें समृद्धि देती हो। हम तुम्हारी मातृवत् आज्ञाओं का पालन करें। विदुषी स्त्रियां समस्त समाज के लिए 'मां' समान हैं।

ऋग्वेद २।४१।१६

हे उत्तम ज्ञान देनेवाली माता! आपके ज्ञान से हम पोषित होते हैं। कृपया हमें सही मार्ग दिखाइए।

ऋग्वेद २।४१।१७

हे विदुषी स्त्री! समाज का समस्त जीवन तुझ पर आश्रित है। तुम हमें सही शिक्षा देती हो। समाज के सभी वर्गों को तुमसे ज्ञान मिले।

ऋग्वेद ६।४९।७

हे विदुषी नारी! आप हमारे चरित्र को पवित्र करती हैं। आप उत्तम गुण कर्म स्वभाव वाली हैं। सभी के लिए सुखकारक आपकी इस महानता को हम नमस्कार करते हैं।

ऋग्वेद ६।६१।२

जैसे नदी शक्तिशाली पर्वतों और चट्टानों को भी खंडित कर देती है, वैसे विदुषी नारी अपनी बुद्धिमत्ता से ही मिथक और अतिश्योक्ति को नष्ट कर देती है। हम अपनी मधुर वाणी और उत्तम कर्मों से उसे प्रणाम करें।

ऋग्वेद ६।६१।३

हे विदुषी नारी! आप अपने ज्ञान और चरित्र से हमारे अन्दर के आसुरी भावों को नष्ट करो। आप हमें वेदज्ञान का उपहार दो। हे श्रेष्ठ कर्मों को करनेवाली! जैसे नदी जल को प्रवाहित करती है वैसे आप हमें ज्ञान का प्रवाह देती हो।

ऋग्वेद ७।९६।३

विदुषी नारी समाज का कल्याण ही करती है। वह हमें ज्ञानवान और सचेत बनाती है। यज्ञ के मन्त्रों की भांति वह हमें मार्ग दिखाती है और विश्व के सभी पदार्थों का सही उपयोग सिखाती है।

ऋग्वेद १०।७।१७

श्रेष्ठ और बलिष्ठ समाज चाहनेवाले नारी का सम्मान करें और उसे प्रसन्न रखें। दिव्यगुणों की कामना करनेवाले नारी का सम्मान करें और उसे प्रसन्न रखें। जो नारी का सम्मान करते हैं वे सुख़, ज्ञान और आनंद के भागी होते हैं।

अथर्ववेद ७।५७।१

जब भी मेरा मन इस संसार में लोगों की नीचता और उनके न समझने से क्षुब्ध हो उठे तब विदुषी स्त्री मेरे घावों पर मरहम लगाए।

(ऐसा इसलिए क्योंकि स्त्रियां स्वभावतः सौम्य गुणों और भावनात्मक सूझ-बूझ से युक्त होती हैं जबकि पुरुषों में ये गुण सहजता से नहीं मिलते।)

हे ईश्वर! आप हमारे राष्ट्र और विश्व की नारियों को वैदिक आदर्शों को अपनाने की प्रेरणा दें और हम भी स्त्रियों के सम्मान को सर्वोच्च स्थान दें ताकि भारत पुनः विश्वगुरु के पद पर आसीन हो सके।

अध्याय ३

नारी – अदम्य साहस की प्रतिमा

इस स्वार्थी संसार में शूरवीरों को अपना सर्वस्व न्यौछावर करने की प्रेरणा 'मां' ही है।

-अग्निवीर

आज नारी की छवि या तो साहसहीन, निर्बल, भीरू की है या फ़िर उसे भोग्य वस्तु बनाकर पेश किया जाता है। इसका प्रसार मिडिया ने तो किया ही है लेकिन कुछ सम्प्रदाय भी नारी के बारे में यही राय रखते हैं। जिसके कारण समाज की अत्यधिक गिरावट हुई है। नारी की इस अवहेलना और अनादर से ही आज हम असामयिक मौतें, भय और अन्याय से ग्रस्त हैं। वेदों की घोषणा को महर्षि मनु अपनी संहिता में देते हुए कहते हैं (३३।५६) : "जो समाज स्त्री का आदर करता है वह स्वर्ग है और जहां स्त्री का अपमान होता है, वहां किए गए सत्कर्म भी ख़त्म हो जाते हैं।"

वेदों के इस महत्वपूर्ण सन्देश की अनदेखी के कारण ही भारत एक ऐसा गुलाम राष्ट्र बना जिसे गुलामों द्वारा ही चलाया जाता रहा और यही कारण है कि आज बहुत सारी तथाकथित प्रगति के बावजूद भी दुनिया एक खतरनाक और दाहक जगह बन गई है। महिलाएं – जो साहस का उद्गम हैं उनको यथोचित सम्मान न मिलना ही इस का मूल कारण है। अगर हम ने स्त्रियों को भोगविलास और नुमाइश की वस्तु मान लिया तो कर्मफल व्यवस्था के अनुसार हमें अत्यंत कठोर परिणाम भुगतने होंगे और यही हो रहा है। लेकिन अगर हम मातृशक्ति को साहस और हमारी समस्त अच्छाइयों का प्रतिमान मान लें तो हम संसार को स्वर्ग बना सकेंगे।

वेदों पर आधारित एक बलिष्ठ और सशक्त समाज में स्त्री का सहज गुण उसका साहस है। उसका यह साहस उसकी अपनी आत्मा और मन के बल से उपजता है, यह साहस कोई दुस्साहस नहीं है।

स्त्रियों के शौर्य की महिमा गाते वेद मन्त्र

अथर्ववेद १४।१।४७

हे नारी, तू समाज की आधारशिला है। तेरे लिये हम सुखदायक अचल शिलाखंड को रखते हैं। इस शिलाखंड के ऊपर खड़ी हो, यह तुझे दृढ़ता का पाठ पढ़ायेगा। इस शिलाखंड के अनुरूप तू भी वर्चस्विनी बन जिससे संसार में आनंदपूर्वक रह सके। तेरी आयु सुदीर्घ हो ताकि हम तेरे तेज को पा सकें।

यजुर्वेद ५।१०

हे नारी, तू स्वयं को पहचान। तू शेरनी है। हे नारी, तू अविद्या आदि दोषों पर शेरनी की तरह टूटनेवाली है, तू दिव्य गुणों के प्रचार के लिए स्वयं को शुद्ध कर। हे नारी, तू दुष्कर्मों एवं दुर्व्यसनों को शेरनी के समान विध्वस्त करने वाली है, सभी के हित के लिए तू दिव्य गुणों को धारण कर।

यजुर्वेद ५।१२

हे नारी तू शेरनी है, तू आदित्य ब्रह्मचारियों को जन्म देती है, हम तेरी पूजा करते हैं। हे नारी, तू शेरनी है, तू समाज में महापुरुषों को जन्म देती है,

हम तेरा यशोगान करते हैं। हे नारी, तू शेरनी है, तू श्रेष्ठ संतान को देनेवाली है, तू धन की पुष्टि को देनेवाली है, हम तेरा जयजयकार करते हैं, हे नारी, तू शेरनी है, तू समाज को आनंद और समृद्धि देती है, हम तेरा गुणगान करते हैं। तेरे मान- सम्मान के लिए हम अपना सर्वस्व अर्पण करने का प्रण लेते हैं। हे नारी, सभी प्राणियों के हित के लिए हम तुझे नियुक्त करते हैं।

यजुर्वेद १०।२६

हे नारी, तू सुख़ देनेवाली है, तू सुदृढ़ स्थितिवाली है, तू क्षात्र बल की भंडार है, तू साहस का उद्गम है। तेरा स्थान समाज में गौरवशाली है।

यजुर्वेद १३।१६

हे नारी, तू ध्रुव है, अटल निश्चय वाली है, सुदृढ़ है, तू हम सब का आधार है। परमपिता परमेश्वर ने तुझे विद्या, वीरता आदि गुणों से भरा है। समुद्र के समान उमड़ने वाली शत्रु सेनाएं भी तुझे हानि न पहुंचा सकें, गिद्ध के समान आक्रान्ता तुझे हानि न पहुंचा सकें। किसी से पीड़ित न होती हुई तू विश्व को समृद्ध कर। (अर्थात् पूरे समाज को नारी की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए, ताकि वह समाज में अपना योगदान दे सके। नारी के गौरव के लिए अपने प्राण तक उत्सर्ग करने वाले वीरों का यह प्रेरणा सन्देश है।)

यजुर्वेद १३।१८

हे नारी, तू अद्भुत सामर्थ्य वाली है। तू भूमि के समान दृढ़ है। तू समस्त विश्व के लिए मां है। तू सकल लोक का आधार है। तू विश्व को कुमार्ग पर जाने से रोक, विश्व को दृढ़ कर और हिंसा मत होने दे।

(यह मन्त्र कहता है कि हर स्त्री को मां के रूप में सम्मान देने से ही समाज में शांति, स्थिरता और समृद्धि आएगी। इस के विपरीत स्त्रियों का भोगवादी चित्रण समाज में दुखों और आपत्तियों का कारण है। आज आदर्श रूप में झाँसी की रानी, अहिल्याबाई आदि वीरांगनाओं को सामने रखना होगा।)

यजुर्वेद १३।२६

हे नारी, तू विघ्न–बाधाओं से पराजित होने योग्य नहीं है बल्कि विघ्न-बाधाओं को पराजित कर सकने वाली है। तू शत्रुओं को परास्त कर, सैन्य-बल को परास्त कर। तुझ में सहस्त्र पुरुषों का पराक्रम है। अपने असली सामर्थ्य को पहचान और अपनी वीरता प्रदर्शित कर के तू विश्व को प्रसन्नता प्रदान कर।

यजुर्वेद २१।५

हे नारी, तू महाशाक्तिमती है, तू श्रेष्ठ पुत्रों की माता है। तू सत्यशील पति की पत्नी है। तू भरपूर क्षात्रबल से युक्त है। तू शत्रु के आक्रमण से जीर्ण न होनेवाली है। तू अतिशय कर्मण्य है। तू शुभ कल्याण करनेवाली है। तू शुभ नीति का अनुसरण करनेवाली है। हम तुझे रक्षा के लिए पुकारते हैं।

(यह मन्त्र कहता है कि गलत मार्ग पर चलने वाले पति का अन्धानुकरण न करके पत्नी को सत्य और न्याय की स्थापना के लिए आगे बढ़ना चाहिए क्योंकि नारी में असीम शक्ति का निवास है।)

ऋग्वेद ८।६७।१०

हे खंडित न होने वाली, सदा अदीन बनी रहने वाली पूजा योग्य नारी, हम तुझे परिवार एवं राष्ट्र में उत्कृष्ट सुख़ बरसाने के लिए पुकारते हैं ताकि हम अभीष्ट लक्ष्य प्राप्त कर सकें।

ऋग्वेद ८।१८।५

हे नारी, जैसे तू शत्रु से खंडित न होनेवाली, सदा अदीन रहनेवाली वीरांगना है वैसे ही तेरे पुत्र भी अद्वितीय वीर हैं जो महान कार्यों का बीड़ा उठानेवाले हैं। वे स्वप्न में भी पाप का विचार अपने मन में नहीं आने देते, फ़िर पाप- आचरण तो क्या ही करेंगे! वे द्वेषी शत्रु से भी लोहा लेना जानते हैं क्योंकि तुम मां हो।

यजुर्वेद १४।१३

हे नारी, तू रानी है। तू सूर्योदय की पूर्व दिशा के समान तेजोमयी है! तू दक्षिण दिशा के समान विशाल शक्तिवाली है। तू सम्राज्ञी है, पश्चिम दिशा के समान आभामयी है। तू अपनी विशेष कांति से भासमान है, उत्तर दिशा के समान प्राणवती है। तू विस्तीर्ण आकाश के समान असीम गरिमावाली है।

ऋग्वेद १०।८६।१०

नारी तो आवश्यकता पड़ने पर बलिदान के संग्राम स्थल में भी जाने से नहीं हिचकती। जो नारी सत्य विधान करने वाली है, वीर पुत्रों की माता है, वीर की पत्नी है, वह महिमा पाती है। उसका वीर पति विश्व भर में प्रसिद्धि पाता है।

यजुर्वेद १७।४४

हे वीर क्षत्रिय नारी, तू शत्रु की विशाल सेनाओं को परास्त कर दे। शत्रुओं के लिए प्रयाण कर, उनके ह्रदयों को शोक से दग्ध कर दे। अधर्म से दूर रह और शत्रुओं को निराशा रूपी घोर अंधकार से ग्रस्त कर ताकि वो फ़िर सिर न उठा पाएँ।

यजुर्वेद १७।४५

विद्वानों द्वारा शिक्षा से तीक्ष्ण हुई एवं प्रशंसित तथा शस्त्र आदि चलाने में कुशल हे नारी, तू शत्रुओं पर टूट पड़। शत्रुओं के पास पहुंचकर उन्हें पकड़ ले और किसी को भी छोड़ मत, कैद करके कारागार में डाल दे।

ऋग्वेद ६।७५।१५

हे वीर स्त्री, अपराधियों के लिए तुम विष बुझा तीर हो। तुम में अपार पराक्रम है। उस बाण के समान गतिशील, कर्म कुशल, शूरवीर देवी को हम भूरि- भूरि नमस्कार करते हैं।

ऋग्वेद १०।८६।९

यह घातक मुझे अवीरा समझ रहा है, मैं तो वीरांगना हूं, वीर पत्नी हूं, आंधी की तरह शत्रु पर टूट पड़ने वाले वीर मेरे सखा हैं। मेरा पति विश्वभर में वीरता में प्रसिद्ध है।

ऋग्वेद १०।१५९।२

मैं राष्ट्र की ध्वजा हूं, मैं समाज का सिर हूं। मैं उग्र हूं, मेरी वाणी में बल है। शत्रु-सेनाओं का पराजय करने वाली मैं युद्ध में वीर-कर्म दिखाने के पश्चात ही पति का प्रेम पाने की अधिकारिणी हूं।

ऋग्वेद १०।१५९।३

मेरे पुत्रों ने समस्त शत्रुओं का संहार कर दिया है। मेरी पुत्री विशेष तेज-स्विनी है और मैं भी पूर्ण विजयिनी हूं। मेरे पति में उत्तम कीर्ति का वास है।

ऋग्वेद १०।१५९।४

मेरे पति ने आत्मोसर्ग की आहुति दे दी है, आज वही आहुति मैंने भी दे दी है। आज मैं निश्चय ही शत्रु रहित हो गई हूं।

ऋग्वेद १०।१५९।५

मैं शत्रु रहित हो गई हूं, शत्रुओं का मैंने वध कर दिया है, मैंने विजय पा ली है, वैरियों को पराजित कर दिया है। शत्रु – सेनाओं के तेज को मैंने ऐसे नष्ट कर दिया है, जैसे अस्थिर लोगों की संपत्तियां नष्ट हो जाती हैं।

आइए, नारी को उसके सत्य स्वरुप – मां के स्वरुप में पूजें

और नारी भी अपने 'स्व' को पहचाने ताकि समाज, राष्ट्र और पूरी मानव जाति का कल्याण हो।

अध्याय ४

नारी – ज्ञान का अरुणोदय

यहाँ दो विश्व बसते हैं, एक सांसारिक और एक मां का विश्व – जिसके केंद्रबिंदु तुम हो।

-अग्निवीर

वेद नारी को ज्ञान का स्रोत और भविष्य की आशा कहते हैं। यह सही भी है क्योंकि जहाँ वह शिशु के लिए मां के रूप में उसकी प्रथम शिक्षिका है, वहीं धैर्यशाली, भावनात्मक रूप से परिपक्व और बुद्धिमान विचारक भी है जो समाज में शिक्षा और समझ का प्रसार करती है। वेद स्त्रियों को 'उषा' अर्थात् 'भोर' या 'प्रभात वेला ' या 'सूर्योदय' के समान बतलाते हैं। 'उषा' की महिमा गाने वाले बहुत से मन्त्र वेदों में हैं। 'स्त्री' और 'उषा' की इस समानता को सहज ही समझा जा सकता है। जैसे उषा हमारे जीवन में प्रकाश और विचारों में शुद्धता लाती है, वैसे ही स्त्री भी 'माता' के रूप में

अपने शिशु के जीवन को प्रकाशित करती है।

देखा जाए तो प्रत्येक नारी में एक 'मां' छिपी होती है – जो उसके गुणों से, अन्यों का ध्यान रखने की उसकी विशेषता से, उसकी ममता से, उसके धैर्य और उसकी नि:स्वार्थता से झलकती है। इसलिए वेद प्रत्येक नारी को भले ही उसकी आयु और रिश्ता कोई भी हो, माता के रूप में देखते हैं। जैसे उष:काल में जागनेवाला मनुष्य निश्चित ही दीर्घ आयु और ऐश्वर्य पाता है, उसी प्रकार जिस समाज में स्त्रियों का सम्मान होता है, वह सदैव हर्षित और फ़ला-फ़ूला रहता है और जो प्रभात वेला में नीच कर्मों में ड़ूबा और सोया रहता है – वह आनन्द से कोसों दूर रहते हुए अपना भविष्य नष्ट करता है।

जिस समाज में स्त्रियों के साथ बुरा बरताव होता है या भोग्य-वस्तु की तरह उनका व्यापारीकरण किया जाता है वह समाज दुर्भाग्य, दु:खों और असफ़लताओं से ग्रस्त हो जाता है। स्त्रियों का सच्चा आदर ममता, ज्ञान, मार्गदर्शन, नेतृत्व और बुद्धिमत्ता की प्रतिक – 'मां' के रूप में ही है।

वेदों में इस 'मां' की कई रूपों में प्रशंसा की गई है।

जैसे 'सरस्वती' – ज्ञान का स्रोत,

सहस्रवीर्या – शौर्य और धैर्य की प्रतिमान,

उषा – ज्ञान से आलोकित करनेवाली और आशा की पहली किरण।

ऋग्वेद के मन्त्र

आइये, 'मां उषा' का बख़ान करते ऋग्वेद के कुछ मन्त्रों को देखें -

ऋग्वेद ४।१४।३

हे तेजस्वी नारी! तुम दीप्तिमान हो। अरुणिमा छिटकाती हुई प्रात:काल के समान समाज से अविद्या को दूर करने के लिए तुम आती हो।

ऋग्वेद ७।७८।३

हम मेधावी स्त्रियों को अपने उत्तम गुणों से समाज को आलोकित करते हुए देखते हैं। उन्होंने ज्ञान के सूर्य और श्रेष्ठ कर्मों की अग्नि को जन्म दिया है। उनके तेज से अविद्या, पाप और नकारात्मकता का अन्धकार नष्ट हो गया है।

ऋग्वेद १।१२४।३

हम देख रहे हैं उस ज्योतिर्मयी स्त्री को जो उत्तम गुणों के वस्त्र धारण किये हुए है, जो दिव्य प्रकाश की पुत्री है और बौद्धिक प्रतिभा से ओत-प्रोत है, जो सत्य और सद्गुणों का ही अनुसरण करती है। अपने लक्ष्य को जानती हुई वह अपनी मर्यादाओं का कभी उल्लंघन नहीं करती।

ऋग्वेद १।४८।८

सम्पूर्ण विश्व ही श्रेष्ठ नारी के आगे नतमस्तक होता है, जो हमें ज्ञान और दूरदृष्टि से आलोकित करती है। वह समाज की मार्गदर्शक है, जो सभी को ज्ञान देती है। वह समृद्धि का प्रतिक और बुद्धिमत्ता की पुत्री है। हम उसका आदर करें जो समाज से द्वेष और हिंसा की वृत्तियों को नष्ट करती है।

ऋग्वेद १।९२।५

सारा समाज तेजस्वी स्त्री का आदर और प्रशंसा करे। वह सच्चाई, सद्गुण, निःस्वार्थता, ज्ञान और सत्कर्मों का प्रतिमान है। वह राग-द्वेष, अविद्या, हिंसा और दुष्टता के कठिनतम अवरोध को भी अपने दीप्तिमान तेज से नष्ट कर देती है।

ऋग्वेद १।११३।५

श्रेष्ठ स्त्री समाज में छाए अज्ञान, राग-द्वेष, हिंसा और दुष्टता के घोर अंधकार को अपनी बुद्धिमत्ता के प्रकाश से नष्ट कर देती है। वह समाज में सभी श्रेष्ठ कार्यों को दृढ़ता से बढ़ावा देनेवाली है। वह प्रकाश की पुत्री है जो समाज में अच्छाई और ज्ञान के सूर्य को प्रज्वलित करती है।

ऋग्वेद १।११३।१२

श्रेष्ठ स्त्री समृद्धि का प्रतिक है। वह सम्पूर्ण समाज में अपनी प्रतिभा का उजाला फ़ैलाती है, आलस्य को त्याग कर सक्रीय हो अच्छे कर्म करने और परोपकार के कार्यों में हमें प्रवृत्त करती है तथा ऐश्वर्य व आनन्द प्रदान करती है।

ऋग्वेद १।१२३।१३

हे ज्योतिर्मयी नारी! तुम सत्यता और सद्गुणों की रश्मि को दृढ़ता से पकड़ती हो। तुम हमें उत्तम विचार, उत्तम वाणी और उत्तम कर्मों में प्रवृत्त करो। तुम हमारे अज्ञान को दूर कर हमें प्रेरित करो जिससे हम भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धि को प्राप्त कर सकें।

सारांश

वेदों का सन्देश बहुत साफ़ और स्पष्ट है यदि हम समृद्धि और आनन्द चाहते हैं तो हमें नारी को समाज में उसका सर्वोच्च स्थान प्रदान करना ही होगा। हम उन्हें समाज प्रबोधन के कार्यों में अग्रणी रखें और हम मातृत्व की दिव्यता की शरण में जाएँ।

हम सदैव स्त्रियों का सम्मान करें और वे हमेशा हमें 'उषा' के रूप में प्रकाशित करती रहें।

अध्याय ५

मां – स्त्री का असली रूप

मनुष्यों की ईश्वर में आस्था का एक कारण 'मां' है।

-अग्निवीर

वैदिक धर्म जिन श्रेष्ठ सिद्धांतों पर आधारित है उन में 'मातृवत परदारेषु' (सभी स्त्रियाँ मेरी माँ हैं) की विलक्षण भावना भी शामिल है। यहाँ तक कि पति पत्नी के लिए भी आदेश है कि जिस तरह गाय अपने नवजात बछड़े से प्यार करती है वैसा ही स्नेह एक-दूसरे से करें।

स्त्रियों को उनका 'मातृवत' सम्मान न देने से ही हमारे दुर्भाग्य की शुरुआत हुई है। स्त्रियों को विलास की वस्तु मानने वालों के लिए वेद अत्यंत कड़ा दंड देते हैं। स्त्रियों को भोग्या की तरह पेश करने वाले समाज का नाश निश्चित है। जिसमें आज सारा विश्व ही हिंसा, द्वेष, आतंकवाद, भय, त्रासदी और मृत्यु से नरक बना हुआ है।

पश्चिमी देशों में कामुकता और स्वेच्छाचारिता बहुत भाती है इसीलिए वहां मानसिक रोगी भी बढ़ते जाते है। मुस्लिम देश आतंकवदियों और उन्मादियों के उत्पादन का अड्डा बन गए हैं, वहां स्त्रियों को बच्चों की प्रथम गुरु होने का हक़ जो नहीं है। हिन्दू अपने अंतर्विरोधों में ही फंसे हुए हैं। वे 'वेदों' को अपना मूल मानते तो हैं पर हज़ार साल की गुलामी और बाहरी दुनिया का अनुसरण करने की आदत ने उन्हें आडम्बरी बना दिया है। इसलिए जहाँ हिन्दू समाज स्त्रियों को 'माता' मानता है वहीँ उन पर वेदों के पढने और धार्मिक संस्कारों के करने में भी रोक लगाता है। यही वजह है कि सहस्त्रों वर्षों से वेदों का जतन करने वाली इस भूमि पर स्त्रियों का जीवन, शिक्षा और उनका रुतबा पुरुषों की तुलना में अपने पूरे हक़ तक नहीं पहुँच पाया है।

कर्मफल सिद्धांत के अनुसार अधिक योग्य और सामर्थ्यवान को दण्ड भी उतना ही कठोर मिलता है। और शायद हम यही दंड भुगत रहे हैं क्योंकि स्त्री ही राष्ट्र की प्रगति की सूत्रधार है और क्योंकि वही परवश हो गयी है इसीलिए तो इस देश की अस्मिता मृत हो गयी है और यह राष्ट्र निर्बल होता जा रहा है।

भारतवर्ष में स्त्रियों की अत्यंत दुर्दशा हो रही है – जन्म से पहले ही उनकी हत्या, अशिक्षा, अत्याचार, शारीरिक और मानसिक शोषण – उत्पीडन, छेड़ -छाड, बलात्कार इत्यादि के बढ़ते मामले, इन दुष्कृत्यों में इस देश के बड़े-बड़े नेता, अधिकारी और संभ्रांत लोगों का भी शामिल होना और इस सब के खिलाफ कड़े कानून का अभाव – यह ऋषियों की इस पवित्र भूमि पर कलंक है। और यह सब तब हो रहा है – जब हिन्दू उसे देवी और माता के रूप में पूज रहे हैं।

स्त्री का सच्चा सम्मान

परन्तु वेद स्त्रियों को अत्यंत उच्च आदर देते हुए कहते हैं कि किसी भी देश और समाज की प्रगति के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि स्त्रियों को उनका उचित सम्मान मिले। जिसके बिना किये हुए सभी शुभ कर्म भी व्यर्थ चले जाते हैं। स्त्री का सर्वोच्च सम्मान उसका मातृत्व है और वैदिक धर्म स्त्री को यही सम्मान देता है।

देवी, माता, उषा, अदिति, दुर्गा, सरस्वती इत्यादि अलग से कोई अदृश्य दैवीय रूप नहीं हैं बल्कि इस धरातल की स्त्रियाँ ही असल में यह देवियाँ हैं। यह मूर्खता ही होगी कि हम सच्चे रत्नों की अवहेलना कर के किन्हीं काल्पनिक रूपों को पूजें। इसलिए इन की पूजा घंटे- घड़ियाल बजाने से, शंख फूंकने से, धूप- आरती से, बताशा, नारियल, प्रसाद, चुनरी चढ़ाने से या माता रानी के नारे लगाने से नहीं होने वाली। बल्कि इन की असली पूजा का स्वरुप यह है कि हम प्रत्येक स्त्री को दुर्गा समझ कर उसे स्वयं शक्तिशाली और बहादुर बनाने का प्रयत्न करें और उसके इन गुणों से राष्ट्र की उन्नति और रक्षा में सहायता प्राप्त करें। सरस्वती की सच्ची पूजा के लिए जरूरी है कि हम स्त्रियों में वैदिक गुणों का विकास करें जिससे वे बुराइयों से अलिप्त रहकर समाज और राष्ट्र को तेजोमय कर दें। 'जय माता दी' के नारे लगाने के साथ ही हम यह प्रण भी करें कि हम मन, वचन और कर्म से सभी स्त्रियों को अपनी 'मां' के रूप में आदर देंगे – आयु, जाति, धर्म और स्थान भेद के बिना।

स्त्री चाहे छोटी बच्ची हो, किशोरी, युवती, प्रौढ़ या वृद्ध महिला हो, मां, बहन, पत्नी, बेटी या कोई भी हो, ममता उसका स्वभावगत गुण है और यही उसकी असली पहचान है। स्त्री की उपस्थिति मात्र ही सुख, शांति देने वाली, गलत कामों को रोकने वाली और शुभ गुणों को बढ़ाने वाली है। अपराधिक आंकड़ों से भी यह बात पुष्ट होती है कि जुर्म, नशा, हिंसा, असभ्य भाषा के प्रयोग इत्यादि में स्त्रियों की मौजूदगी से गिरावट आती है। अब यह हम पर है कि हम उन के इन गुणों का उपयोग अपनी उन्नति में करते हैं या उनका निरादर कर अपना विनाश करते हैं। स्त्रियों को भी चाहिए कि वे अपने इस गरिमामयी स्थान को पहचानें और समाज में अपनी जिम्मेदारी और मर्यादा को समझें और राष्ट्र की उन्नति में अपना योग दें।

वेद मन्त्रों में मां की गरिमा

ऋग्वेद १०।१७।१०

हे माताओं! आप अपनी करुणा, प्रज्ञा और तेजस्विता से हमें शुद्ध करें। माताएं हमारे सभी पाप, दोष और कमियां छुड़ा सकती हैं। उनका स्नेहमयी

साथ हमें दृढ़,पवित्र और महान बनाता है।

यजुर्वेद ६।१७

हे शुद्ध और स्नेहमयी माताओं! हमारे सभी पाप, दुर्गुण और मलिनता साफ़ करो। झूठ, ईर्ष्या– द्वेष और निराशा को हम से दूर बहा दो।

यजुर्वेद ६।३१

हे पवित्र और स्नेहमयी माताओं! हमारे मन, वाणी, आंख, कान, आत्मा और समाज को सद्‌गुणों से पूरित करो।

अथर्ववेद ३।१३।७

हे शुद्ध और स्नेहमयी माताओं! मैं तुम्हारा प्यारा पुत्र हूँ। हे शक्तिमयी माताओं मेरी उच्च कामनाओं को पूर्ण करने का मार्ग प्रशस्त करो।

ऋग्वेद ६।६१।७

हे तेजस्विनी मां! तुम में दुष्टता के नाश का सामर्थ्य है। तुम्हारा चरित्र सोने जैसा है। तुम निराशा के बादलों को भेद देती हो। तुम वीरांगना हो और हमारा कल्याण और यश ही चाहती हो।

अथर्ववेद ७।६८।२

हे ज्योतिर्मयी मां! शांति , सुख और सफलता के रूप में तुम हम पर आशीष बरसाओ। तुम हम से हमेशा प्रसन्न रहो और तुम्हारी कृपादृष्टि को दूर करने वाला कोई काम हम न करें।

ऋग्वेद १।११३।६

हे ज्योतिर्मयी कृपालु मां! तुम हमें राष्ट्र, समाज और विश्व की रक्षा के लिए शूरता के मार्ग पर चलाओ। तुम्हारी प्रेरणा से हम, सब की भलाई के कार्य करें। तुम हम से स्वार्थ रहित श्रेष्ठ कर्म या यज्ञ कराओ। तुम्हारी प्रेरणा से हम सब के लिए स्थिर आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त करें। तुम्हारी प्रेरणा से हम सम्पूर्ण समाज को ही ज्ञानवान बनाएं। धर्म, मत, भूगोल, जन्म और जाति

के झूठे भेद से परे तुम सारे विश्व को ही प्रेरित करो।

ऋग्वेद १।११३।१९

हे जीवनदायिनी तेजस्विनी मां! सभी श्रेष्ठ लोग तुम्हें मां का सम्मान दें और तुम उन्हें राह दिखाओ। तुम समाज, राष्ट्र और विश्व की रक्षक बनो। तुम सभी श्रेष्ठ और धार्मिक कामों की प्रतीक बनो। अपनी ज्ञान ज्योति से तुम अज्ञान का अँधेरा दूर हटाओ। तुम हमारे भावों और कर्मों में विवेक जगाओ। तुम सम्पूर्ण जगत की मां बनो और हमें ज्ञान और करुणा से नव-जीवन प्रदान करो। इस तरह हमें गौरव और समृद्धि के मार्ग पर ले चलो।

ऋग्वेद ७।७५।२

हे ज्योतिर्मयी मां! हमें श्रेष्ठ जनों के मार्ग पर आगे बढाओ और सफलता दो। शुभ कामों से हमें अद्‌भुत कीर्ति और ऐश्वर्य प्रदान करो। तुम्हारे आशीष से हम उत्तम कर्मों से प्राप्त यश के भागी बनें। इसी समय, इसी क्षण!

ऋग्वेद ७।७७।४

हे ज्योतिर्मयी मां! हमारे अन्दर से द्वेष हटाओ। हमारे तुच्छ विचारों को ख़त्म कर हमें विशाल ह्रदय बनाओ। इस तरह हमें समृद्ध कर, सफलता की ओर ले चलो।

ऋग्वेद ८।१८।६

हे शुद्ध मन वाली श्रेष्ठ मां! हमें मेधा और अच्छी भावनाओं का वरदान दो। हमें छल–कपट से बचाओ। हमारे पापों को साफ़ कर हमें हर हाल में शुभ कर्म करने वाला बनाओ।

ऋग्वेद ८।१८।७

पवित्र, जीवनदायिनी आभामय स्त्री प्रतिदिन मां के रूप में सम्मानित हो। जिससे वह हमें शांति दे और समाज से विद्वेष का खात्मा कर दे।

ऋग्वेद ८।६७।१२

हे मां! तुम उत्तम कर्मों को करने वाली और शुद्ध मन वाली हो। तुम हमारे पाप नष्ट कर हमें सफलता की राह दिखाओ। हमें करुणा, सत्यता और उन्नति से भरा जीवन जीने वाला बनाओ।

अथर्ववेद ७।६।४

अद्भुत बल चाहने वाले हम, पवित्र मां को उत्तम शब्दों और कामों से प्रसन्न करते हैं। वह विस्तृत आकाश की तरह धैर्यशाली है। वह हमारे सभी दुखों का निवारण कर हर हाल में हमारी रक्षा करेगी।

ऋग्वेद १०।५९।५

हे जीवनदायिनी मां! हमें सशक्त मनोबल और उत्कृष्ट बुद्धि दो। दीर्घ आयु पाने के लिए हमें उत्तम कर्मों में प्रेरित करो। हम सूर्य की तरह संसार को प्रकाशमान कर दें। तुम हमें प्रसन्नता से पोषित करो।

ऋग्वेद १०।५९।६

हे जीवनदायिनी मां! हमें श्रेष्ठ देखने वाली आँखें और श्रेष्ठ कर्मों का जीवन प्रदान करो। हम हमेशा प्रगति करें और सुख भोगें। हमारी बुद्धि हमेशा शुद्ध और सद्गुणों से युक्त रहे।

यजुर्वेद ३५।२१

हे धैर्यशाली मां! हमें सुख और आधार प्रदान करो। हमें कीर्ति और कल्याण प्रदान करो। हमारे पापों को नष्ट करके हमें शुद्ध करो।

यजुर्वेद ६।३६

हे मां! समाज तुम्हारे सामर्थ्य को समझे, पूर्व-पश्चिम- उत्तर-दक्षिण और सभी ओर से तुम्हारा अनुग्रह मांगे। तुम उन्हें ख़ुशी और समृद्धि का आशीष दो।

यजुर्वेद ११।६८

हे मां! हमें आपसी फूट से बचाओ। हिंसा और द्वेष से हमारी रक्षा करो। हमें वीरता के कर्म में आगे बढाओ। हम दोनों ही मिलकर महान कार्य पूर्ण करें।

ऋग्वेद १।२२।११

श्रेष्ठ जनों की महान माताएं और पत्नियाँ सदा संपन्न और समृद्ध बनी रहें और हमें सौभाग्य और ख़ुशी का वरदान दें।

यजुर्वेद १२।१५

बुद्धिमत्ता और सुशिक्षा चाहने वाले मां के सानिध्य में जाएँ, उसके आशीर्वाद से सभी विद्याओं में पारंगत बनें, मां को कभी दुखी न करें। मां के पवित्र आशीष से स्वयं को ज्योतिमान करें।

सारांश

आइए, वेदों के उपदेश से प्रेरित हो कर हम ऐसा समाज बनाएं जहाँ स्त्रियाँ अपनी स्वाभाविक मातृशक्ति का विकास कर सकें और सम्पूर्ण मानवता की मां के रूप में पहचानी जाएं और गौरवान्वित हों। वे अपने इस गरिमामय पद पर सदा आरूढ़ रह सकें और हम उनके सम्मान में कोई कमी न आने दें। इसलिए जरूरी है कि हम सब मिलकर इस पवित्र मार्ग से भटकाने वाली अपने अन्दर और बाहर की सभी आसुरी शक्तियों का विनाश कर दें।

वैयक्तिक, सामाजिक और राष्ट्रीय उन्नति और समृद्धि का यही एक मार्ग है!

अध्याय ६

मनुस्मृति और स्त्री

जीवन मां के निःस्वार्थ प्रेम का प्रतिक है। अन्यों से द्वेष कर उसे अपमानित मत करो।

- अग्निवीर

वेदों में स्त्रियों के उच्च स्थान को देखने के बाद, आइए देखते हैं कि मनुस्मृति स्त्रियों के बारे में क्या कहती है? मनुस्मृति पर स्त्री विरोधी होने और स्त्रियों की अवमानना करने का आरोप लगाया जाता रहा है, इस अध्याय में हम महर्षि मनु की अनुपम कृति मनुस्मृति पर थोपे गए इन आरोपों का विश्लेषण करेंगे।

मनुस्मृति में अत्यधिक प्रक्षेपण किए गए हैं, लेकिन मनस्मृति के नकली श्लोकों को आसानी से पहचान कर अलग भी किया जा सकता है।

प्रक्षेपण रहित मूल मनुस्मृति, महर्षि मनु की अत्यंत उत्कृष्ट कृति है। वेदों के बाद मनुस्मृति ही स्त्री को सर्वोच्च सम्मान और अधिकार देती है। मनुस्मृति तक पहुँचने के लिए वर्तमान युग के आधुनिक नारीवादी ग्रंथों को अभी और अधिक परिष्कृत होने की आवश्यकता है।

जितनी स्पष्टता से मनुस्मृति में स्त्रियों को समृद्ध समाज की नींव कहा गया है, ऐसा कहीं और नहीं दिखाई देता।

स्त्री – समृद्धि की दाता

मनुस्मृति ३।५६

जिस समाज या परिवार में स्त्रियों का आदर- सम्मान होता है, वहां देवता अर्थात् दिव्यगुण और सुख़-समृद्धि निवास करते हैं और जहां इनका आदर-सम्मान नहीं होता, वहां अनादर करने वालों के सभी काम निष्फल हो जाते हैं भले ही वे कितना ही श्रेष्ठ कर्म कर लें, उन्हें अत्यंत दुखों का सामना करना पड़ता है।

यह श्लोक केवल स्त्रीजाति की प्रशंसा करने के लिए ही नहीं है बल्कि यह कठोर सच्चाई है जिसको महिलाओं की अवमानना करने वालों को ध्यान में रखना चाहिए और जो मातृशक्ति का आदर करते हैं उनके लिए तो यह शब्द अमृत के समान हैं। प्रकृति का यह नियम पूरी सृष्टि में हर एक समाज, हर एक परिवार, देश और पूरी मनुष्य जाति पर लागू होता है।

हम इसलिए परतंत्र हुए कि हमने महर्षि मनु के इस परामर्श की सदियों तक अवमानना की। आक्रमणों के बाद भी हम सुधरे नहीं और परिस्थिति बद से बदतर होती गई। १९ वीं शताब्दी के अंत में राजा राम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्या सागर और स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रयत्नों से स्थिति में सुधार हुआ और हमने वेदों के सन्देश को मानना स्वीकार किया।

कई संकीर्ण मुस्लिम देशों में आज भी स्त्रियों को पुरुषों से समझदारी में आधे के बराबर मानते हैं और पुरुषों को जो अधिकार प्राप्त हैं उसकी तुलना में स्त्री का आधे पर ही अधिकार समझते हैं। अत: ऐसे स्थान नर्क से भी बदतर बने हुए हैं। यूरोप में तो सदियों तक बाइबिल के अनुसार स्त्रियों की

अवमानना के पूर्ण प्रारूप का ही अनुसरण किया गया। यह प्रारूप अत्यंत संकीर्ण और शंकाशील था इसलिए यूरोप अत्यंत संकीर्ण और संदेह को पालने वाली जगह थी। ये तो सुधारवादी युग की देन ही माना जाएगा कि स्थितियों में परिवर्तन आया और बाइबिल को गंभीरता से लेना लोगों ने बंद किया। परिणामत: तेजी से विकास संभव हो सका। परंतु अब भी स्त्री एक कामना पूर्ति और भोग की वस्तु है न कि आदर और मातृत्व शक्ति के रूप में देखी जाती है और यही वजह है कि पश्चिमी समाज बाकी सब भौतिक विकास के बावजूद भी असुरक्षितता और आन्तरिक शांति के अभाव से जूझ रहा है।

आइए, मनुस्मृति के कुछ और श्लोकों का अवलोकन करें और समाज को सुरक्षित और शांतिपूर्ण बनाएं –

स्त्रियों की प्रसन्नता आवश्यक है

मनुस्मृति ३।५५

पिता, भाई, पति या देवर को अपनी कन्या, बहन, स्त्री या भाभी को हमेशा यथायोग्य मधुर-भाषण, भोजन, वस्त्र, आभूषण आदि से प्रसन्न रखना चाहिए और उन्हें किसी भी प्रकार का क्लेश नहीं पहुंचने देना चाहिए। जीवन में समृद्धि चाहनेवालों को परिवार की स्त्रियों को हमेशा प्रसन्न रखना चाहिए और हर विपत्ति से उन्हें बचाना चाहिए।

मनुस्मृति ३।५७

जिस कुल में स्त्रियां अपने पति के गलत आचरण, अत्याचार या व्यभिचार आदि दोषों से पीड़ित रहती हैं, वह कुल शीघ्र नाश को प्राप्त हो जाता है और जिस कुल में स्त्रीजन पुरुषों के उत्तम आचरणों से प्रसन्न रहती हैं, वह कुल सर्वदा बढ़ता रहता है।

मनुस्मृति ३।५८

अनादर के कारण जो स्त्रियां पीड़ित और दुखी होकर पति, माता-पिता, भाई, देवर आदि को शाप देती हैं या कोसती हैं – वह परिवार ऐसे नष्ट हो जाता है जैसे पूरे परिवार को विष देकर मारने से, एक बार में ही सब के

सब मर जाते हैं।

मनुस्मृति ३।५९

ऐश्वर्य की कामना करने वाले मनुष्यों को हमेशा सत्कार और उत्सव के समय में स्त्रियों का आभूषण,वस्त्र, और भोजन आदि से सम्मान करना चाहिए। स्त्रियां हमेशा ही श्रद्धा की पात्र हैं।

मनुस्मृति ३।६२

जो पुरुष, अपनी पत्नी को प्रसन्न नहीं रखता, उसका पूरा परिवार ही अप्रसन्न और शोकग्रस्त रहता है और यदि पत्नी प्रसन्न है तो सारा परिवार खुशहाल रहता है।

मनुस्मृति ९।२६

संतान को जन्म देकर घर का भाग्योदय करने वाली स्त्रियां सम्मान के योग्य और घर को प्रकाशित करनेवाली होती हैं। शोभा, लक्ष्मी और स्त्री में कोई अंतर नहीं है। यहां महर्षि मनु उन्हें घर की लक्ष्मी कहते हैं।

मनुस्मृति ९।२८

स्त्री सभी प्रकार के सुखों को देने वाली हैं। चाहे संतान हो, उत्तम परोपकारी कार्य हो या विवाह या फ़िर बड़ों की सेवा – यह सभी सुख़ स्त्रियों के ही आधीन हैं। स्त्री कभी मां के रूप में, कभी पत्नी और कभी अध्यात्मिक कार्यों की सहयोगी के रूप में जीवन को सुखद बनाती है। इस का मतलब है कि स्त्री की सहभागिता किसी भी धार्मिक और अध्यात्मिक कार्यों के लिए अति आवश्यक है।

मनुस्मृति ९।९६

पुरुष और स्त्री एक-दूसरे के बिना अपूर्ण हैं, अत: साधारण से साधारण धर्म कार्य का अनुष्ठान भी पति-पत्नी दोनों को मिलकर करना चाहिए।

अतः जो मूर्ख लोग स्त्रियों को वेद पढ़ने से और वैदिक अनुष्ठानों में भाग लेने से मना करते हैं, वे हिन्दुत्व की मूल अवधारणा से ही अनजान हैं।

मनुस्मृति ४।१८०

एक समझदार व्यक्ति को परिवार के सदस्यों – माता, पुत्री और पत्नी आदि के साथ बहस या झगडा नहीं करना चाहिए।

मनुस्मृति ९।४

अपनी कन्या का योग्य वर से विवाह न करने वाला पिता, पत्नी की उचित आवश्यकताओं को पूरा न करने वाला पति और विधवा माता की देखभाल न करने वाला पुत्र – निंदनीय होते हैं।

बहुविवाह पाप है

मनुस्मृति ९।१०१

पति और पत्नी दोनों आजीवन साथ रहें, व्यभिचार से बचें, संक्षेप में यही सभी मानवों का धर्म है।

अत: धर्म के इस मूल तत्व की अवहेलना कर के जो समुदाय – बहुविवाह, अस्थायी विवाह और कामुकता के लिये गुलामी इत्यादि को ज़ायज ठहराने वाले हैं – वे अपने आप ही पतन और विनाश की ओर जा रहे हैं।

स्त्रियों के स्वाधिकार

मनुस्मृति ९।११

धन की संभाल और उसके व्यय की जिम्मेदारी, घर और घर के पदार्थों की शुद्धि, धर्म और अध्यात्म के अनुष्ठान आदि, भोजन पकाना और घर की पूरी सार -संभाल में स्त्री को पूर्ण स्वायत्ता मिलनी चाहिए और यह सभी कार्य उसी के मार्गदर्शन में होने चाहिए।

इस श्लोक से यह भ्रांत धारणा निर्मूल हो जाती है कि स्त्रियां वैदिक कर्मकांड का अधिकार नहीं रखतीं। इसके विपरीत उन्हें इन अनुष्ठानों में अग्रणी रखा गया है और जो लोग स्त्रियों के इन अधिकारों का हनन करते हैं – वे वेद, मनुस्मृति और पूरी मानवता के ख़िलाफ़ हैं। ऐसे लोग राष्ट्र के

दुर्भाग्य का कारण हैं। स्त्रियों का अपमान करनेवाली इस मनोवृत्ति का हमें पुरज़ोर विरोध करना चाहिए।

मनुस्मृति ९।१२

स्त्रियां आत्म नियंत्रण से ही बुराइयों से बच सकती हैं, क्योंकि विश्वस-नीय पुरुषों (पिता, पति, पुत्र आदि) द्वारा घर में रोकी गई अर्थात् निगरानी में रखी हुई स्त्रियां भी असुरक्षित हैं (बुराइयों से नहीं बच सकती)। जो स्त्रियां अपनी रक्षा स्वयं अपने सामर्थ्य और आत्मबल से कर सकती हैं, वस्तुत: वही सुरक्षित रहती हैं।

जो लोग स्त्रियों की सुरक्षा के नाम पर उन्हें घर में ही रखना पसंद करते हैं, उनका ऐसा सोचना व्यर्थ है। इसके बजाय स्त्रियों को उचित प्रशिक्षण तथा सही मार्गदर्शन मिलना चाहिए ताकि वे अपना बचाव स्वयं कर सकें और गलत रास्ते पर भी न जाएं। स्त्रियों को चारदिवारी में कैद रखना महर्षि मनु के पूर्णत: विपरीत है।

स्त्रियों की सुरक्षा

मनुस्मृति ९।६

एक दुर्बल पति को भी अपनी पत्नी की रक्षा का यत्न करना चाहिए।

मनुस्मृति ९।५

स्त्रियां चरित्र भ्रष्टता से बचें क्योंकि अगर स्त्रियां आचरणहीन हो जाएंगी तो सम्पूर्ण समाज ही विनष्ट हो जाता है।

मनुस्मृति ५।१४९

स्त्री हमेशा स्वयं को सुरक्षित रखे। स्त्री की सुरक्षा – पिता, पति और पुत्र का दायित्व है।

इस का मतलब यह नहीं है कि मनु स्त्री को बंधन में रखना चाहते हैं। श्लोक ९।१२ में स्त्रियों की स्वतंत्रता के लिए उनके विचार स्पष्ट हैं। वे यहां

स्त्रियों की सामाजिक सुरक्षा की बात कर रहे हैं। क्योंकि जो समाज, अपनी स्त्रियों की रक्षा विकृत मनोवृत्तियों के लोगों से नहीं कर सकता, वह स्वयं भी सुरक्षित नहीं रहता।

इसीलिए जब पश्चिम और मध्य एशिया के बर्बर आक्रमणकारियों ने हम पर आक्रमण किए तब हमारे शूरवीरों ने मां-बहनों के सम्मान के लिए प्राण तक न्यौछावर कर दिए! महाराणा प्रताप के शौर्य और आल्हा-उदल के बलिदान की कथाएं आज भी हमें गर्व से भर देती हैं।

हमारी संस्कृति में स्त्रियों का इतना महान स्थान होने के बावजूद भी हम ने आज स्त्रियों को या तो घर में कैद कर रखा है या उन्हें भोग-विलास की वस्तु मान कर उनका व्यापारीकरण कर रहे हैं। अगर हम स्त्रियों के सम्मान की रक्षा करने की बजाय उनके विश्वास को ऐसे ही आहत करते रहे तो हमारा विनाश भी निश्चित ही है।

स्त्री और विवाह

मनुस्मृति ९।८९

चाहे आजीवन कन्या पिता के घर में बिना विवाह के बैठी भी रहे परंतु गुणहीन, अयोग्य, दुष्ट पुरुष के साथ विवाह कभी न करे।

मनुस्मृति ९।९० – ९१

विवाह योग्य आयु होने के उपरांत कन्या अपने सदृश्य पति को स्वयं चुन सकती है। यदि उसके माता -पिता योग्य वर के चुनाव में असफल हो जाते हैं तो उसे अपना पति स्वयं चुन लेने का अधिकार है।

भारतवर्ष में तो प्राचीन काल में स्वयंवर की प्रथा भी रही है। अत: यह धारणा कि माता-पिता ही कन्या के लिए वर का चुनाव करें, मनु के विपरीत है। महर्षि मनु के अनुसार वर के चुनाव में माता-पिता को कन्या की सहायता करनी चाहिए न कि अपना निर्णय उस पर थोपना चाहिए, जैसा कि अधिकांश परिवारों में होता है।

संपत्ति में अधिकार

मनुस्मृति ९।१३०

पुत्र के ही समान कन्या है, उस पुत्री के रहते हुए कोई दूसरा उसकी संपत्ति के अधिकार को कैसे छीन सकता है?

मनुस्मृति ९।१३१

माता की निजी संपत्ति पर केवल उसकी कन्या का ही अधिकार है।

मनु के अनुसार पिता की संपत्ति में तो कन्या का अधिकार पुत्र के बराबर है ही परंतु माता की संपत्ति पर एकमात्र कन्या का ही अधिकार है। महर्षि मनु कन्या के लिए यह विशेष अधिकार इसलिए देते हैं ताकि वह किसी की दया पर न रहे, वो उसे स्वामिनी बनाना चाहते हैं, याचक नहीं। क्योंकि एक समृद्ध और खुशहाल समाज की नींव स्त्रियों के स्वाभिमान और उनकी प्रसन्नता पर टिकी हुई है।

मनुस्मृति ९।२१२-२१३

यदि किसी व्यक्ति के रिश्तेदार या पत्नी न हो तो उसकी संपत्ति को भाई – बहनों में समान रूप से बांट देना चाहिए। यदि बड़ा भाई, छोटे भाई – बहनों को उनका उचित भाग न दे तो वह कानूनन दण्डनीय है।

स्त्रियों की सुरक्षा को और अधिक सुनिश्चित करते हुए, मनु स्त्री की संपत्ति को अपने कब्जे में लेने वाले, चाहें उसके अपने ही क्यों न हों, उनके लिए भी कठोर दण्ड का प्रावधान करते हैं।

मनुस्मृति ८।२८-२९

अकेली स्त्री जिसकी संतान न हो या उसके परिवार में कोई पुरुष न बचा हो या विधवा हो या जिसका पति विदेश में रहता हो या जो स्त्री बीमार हो तो ऐसे स्त्री की सुरक्षा का दायित्व शासन का है। और यदि उसकी संपत्ति को उसके रिश्तेदार या मित्र चुरा लें तो शासन उन्हें कठोर दण्ड देकर, उसे उसकी संपत्ति वापस दिलाए।

दहेज़ का निषेध

मनुस्मृति ३।५२

जो वर के पिता, भाई, रिश्तेदार आदि लोभवश, कन्या या कन्या पक्ष से धन, संपत्ति, वाहन या वस्त्रों को लेकर उपभोग करके जीते हैं वे महा नीच लोग हैं।

इस तरह, मनुस्मृति विवाह में किसी भी प्रकार के लेन-देन का पूर्णत: निषेध करती है ताकि किसी में लालच की भावना न रहे और स्त्री के धन को कोई लेने की हिम्मत न करे।

इस से आगे वाला श्लोक तो कहता है कि विवाह में किसी वस्तु का अल्प–सा भी लेन- देन बेचना और खरीदना ही होता है जो कि श्रेष्ठ विवाह के आदर्शों के विपरीत है। यहां तक कि मनुस्मृति तो दहेज़ सहित विवाह को 'दानवी' या 'आसुरी' विवाह कहती है।

स्त्रियों को पीड़ित करने पर अत्यंत कठोर दण्ड

मनुस्मृति ८।३२३

स्त्रियों का अपहरण करने वालों को प्राण दण्ड देना चाहिए।

मनुस्मृति ९।२३२

स्त्रियों, बच्चों और सदाचारी विद्वानों की हत्या करने वाले को अत्यंत कठोर दण्ड देना चाहिए।

मनुस्मृति ८।३५२

स्त्रियों पर बलात्कार करने वाले, उन्हें उत्पीडित करने वाले या व्यभिचार में प्रवृत्त करने वाले को आतंकित करने वाले भयानक दण्ड दें ताकि कोई दूसरा इस विचार से भी कांप जाए।

मनुस्मृति ८।२७५

माता, पत्नी या बेटी पर झूठे दोष लगाकर अपमान करने वाले को दण्डित किया जाना चाहिए।

मनुस्मृति ८।३८९

माता-पिता, पत्नी या संतान को जो बिना किसी गंभीर वजह के छोड़ दे, उसे दण्डित किया जाना चाहिए।

स्त्रियों को प्राथमिकता

स्त्रियों की प्राथमिकता (लेडिज फर्स्ट) के जनक महर्षि मनु ही हैं।

मनुस्मृति २।१३८

स्त्री, रोगी, भारवाहक, अधिक आयुवाले, विद्यार्थी, वर और राजा को पहले रास्ता देना चाहिए।

मनुस्मृति ३।११४

नवविवाहिताओं, अल्पवयीन कन्याओं, रोगी और गर्भिणी स्त्रियों को आए हुए अतिथियों से भी पहले भोजन कराएं।

आइए, महर्षि मनु के इन सुन्दर उपदेशों (सच्चे मनुवाद) को अपनाकर समाज, राष्ट्र और सम्पूर्ण विश्व को सुख़-शांति और समृद्धि की तरफ़ बढ़ाएं।

सन्दर्भ सूची

मेरा धर्म, प्रियव्रत वेदवाचस्पति, प्रकाशन मंदिर, गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय, हरिद्वार

- Book: Rigveda Samhita, Vol XIII, Swami Satya Prakash Saraswati & Satyakam Vidyalankar, Ved Pratishthana, New Delhi
- “उषा देवता” ऋग्वेद का सुबोध भाष्य, पण्डित श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मंडल, औंध
- अथर्ववेद-हिंदी भाष्य, भाग १-२, क्षेमकरणदास त्रिवेदी, सार्वदे-शिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
- अथर्ववेद का सुबोध भाष्य, (अध्याय ७ –१०), श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
- ऋषि दयानन्द के भाष्य
- वैदिक नारी – पण्डित रामनाथ वेदालंकार
- वैदिक शब्दार्थ विचार – पण्डित रामनाथ वेदालंकार
- वैदिक कोष – पण्डित राजवीर शास्त्री
- डॉक्टर सुरेन्द्र कुमार, पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय और ऋषि दयानन्द के कार्य

संजीव नेवर – एक परिचय

एक बार एक शिक्षिका ने बच्चों से पूछा, अगर इसी पल ईश्वर आपके सामने आ जाएं तो आप क्या करोगे? एक बच्चे ने कहा कि मैं सिर झुका कर प्रणाम करूँगा, दूसरे ने कहा, मैं उसकी पूजा करूंगा, किसी ने कहा, हम उससे खूब सारे पैसे मांगेंगे, सभी बच्चों के पास अपनी-अपनी मांगें थी, जिसे वे ईश्वर से पूरी करवाना चाहते थे। इन सब में एक नन्हा बालक ऐसा भी था जिसने कहा कि वो दौड़ कर ईश्वर की गोद में चढ़ जायेगा और फ़िर उतरेगा ही नहीं, उसके इस सादगीभरे भोले जवाब ने सभी को अचंभित कर दिया। यह एक नन्हे बच्चे की परमपिता की गोद में बैठने की मासूम ललक थी या बालपन में ही उसकी अंतरात्मा द्वारा ईश्वर प्राप्ति का प्रण था?

इस बालक का जन्म १७ जुलाई को कोलकाता में हुआ था। माता–पिता ने उसे संजीव नाम दिया। उसे जानने वाले बताते हैं कि वह पक्का हनुमान भक्त था - जिसे ज़रा भी घटियापन और बेहूदगी असह्य थी। सभी स्त्रियों को अपनी माता के समान ही सम्मान देने की उसकी भावना ने उसे अन्य सभी से अलग बालक बनाया। यह बालक अध्यात्म की उसी राह पर चल पड़ा था, जिस पर कभी राम, कृष्ण, शंकराचार्य, दयानन्द और विवेकानन्द चले थे। फिर आया राम मंदिर आन्दोलन का दौर और इस हनुमान भक्त ने इस बारे में जनमानस को जगाने के लिए बढ़-चढ़ कर काम किया। उसके अन्दर आध्यात्मिकता और राष्ट्रीयता का संगम आकार ले रहा था।

माता-पिता उसकी इस समाज-सेवा से संतुष्ट नहीं थे, वे उसके उज्जवल भविष्य के लिए चिंतित थे, पर भविष्य के बारे में कौन जानता था? इन्हीं दिनों विश्व की कठिनतम परीक्षाओं में से एक आईआईटी जेईई (IIT JEE) को उत्तीर्ण कर संजीव ने विश्व प्रतिष्ठित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) गुवाहाटी में प्रवेश लिया। इस समय तक वे विभिन्न धार्मिक ग्रन्थ – गीता, रामायण, महाभारत, उपनिषद, पुराण और आयुर्वेद इत्यादि पर प्रभुत्व प्राप्त कर चुके थे। अब उन्होंने वेदों का अध्ययन शुरू किया। वैदिक सिध्दान्तो पर चर्चा करने के लिए उन्होंने कई विद्वानों और योगियों से संपर्क किया और शीघ्र ही इस में भी निपुणता प्राप्त कर ली। जब तक वे आईआईएम (IIM) कलकत्ता (भारत के शीर्ष प्रबन्धन संस्थानों में से एक)

से स्नातक होकर निकले, तब तक उन्होंने वेद मन्त्रों को उनके घटक शब्दों में और शब्दों को उनके मूल में विभाजित कर, उनका मूलभाव समझाने की क्षमता हासिल कर ली थी!

२००९ में वैदिक युग की पुनः स्थापना के लिए उन्होंने अपने प्रतिष्ठित कैरियर को त्याग कर 'अग्निवीर' आरम्भ किया। तब तक वे विश्व के आठ देशों में अपनी सेवाएं दे चुके थे, वे स्वास्थ्य, शिक्षा और वित्तीय क्षेत्र के विश्व प्रमुख संस्थानो में कार्य कर चुके हैं। उन्हीं के शब्दों में, "राष्ट्र के बिगड़ते हालात, गुमराह होती युवाशक्ति और मानवता पर मंडराते संकटों को देखते हुए, ईश्वर की प्रेरणा से मैंने अग्निवीर की शुरूआत की क्योंकि यही मुक्ति का मार्ग है।" दो वर्षों के भीतर ही अग्निवीर विश्व में अध्यात्म की प्रथम क्रमांक साईट बन गई। बात चाहे सामाजिक एकता की हो या स्त्रियों के अधिकारों की, वेदों की हो या अध्यात्म की, राष्ट्रीयता की या विश्व शांति की, मानवता की या स्वयं-सहायता के उपायों की, अग्निवीर सभी में अग्रणी है। वेदों के नाम पर फैलाए गए मिथक जैसे – वेदों में गौमांस, शराब, हिंसा, इतिहास, वैज्ञानिक गलतियां इत्यादि के उन्होंने सटीक उत्तर दिए हैं। उन्होंने कट्टरपंथियों को चुनौती दी कि इन झूठे दावों के समर्थन में वेदों से एक भी मन्त्र निकालकर दिखाएं और तीन वर्ष पूर्व दी गई इस चुनौती को स्वीकार करने के लिए आजतक कोई सामने नहीं आया!

लोग अक्सर हैरान होकर पूछते हैं कि उनका दिमाग किस चीज़ से बना है? कभी वे वेदों के विद्यार्थियों को वेद मन्त्र समझाते हैं तो कभी वैज्ञानिकों से 'रोबोटिकी' (Robotics) पर चर्चा करते दिखते हैं। एक तरफ़ वे मूलकण भौतिकी (Particle Physics) समझाते हैं तो दूसरी तरफ़ गीता। संस्थाओं के क्रिया-कलापों का अंदाजा लगाने के लिए प्रारूप का निर्माण करने पर व्याख्यान देते हैं तो उतने ही अधिकार से आत्मा की अमरता पर भी बोलते हैं! आईआईटी के वैज्ञानिकों को वे उन्नत प्रायिकता (Advanced Probability) पढ़ाते हैं तो आचार्यों को योगदर्शन भी! शरीर सौष्ठव के दीवानों के लिए उनका सुगठित तन ईर्ष्या का विषय है, जिन्होनें उन्हें प्रत्यक्ष देखा है वे ही बता सकते हैं कि उनका सौम्य मुख़ किस आभा से दीप्त रहता है! यदि एक वाक्य में उनके व्यक्तित्व को समेटना हो तो कह सकते हैं कि वे उत्तम शरीरयष्टि, अतिउत्तम मेधा और सर्वोत्तम आत्मा का मेल हैं! ऐसा लगता है मानो उस छोटे बच्चे ने ईश्वर को पा लिया हो! अब वे अन्यों

को उच्चता की राह पर ले जाने के कार्य में लगे हैं।

मृदुला

०८ मार्च २०१६, पुणे

अग्निवीर - एक परिचय

अग्निवीर की स्थापना श्री. संजीव नेवर ने की, जो कि आई.आई.टी-आई.आई.एम से जुड़े एक पेशेवर डेटा वैज्ञानिक हैं। साथ ही वे निज को अंतर्बाह्य सुधार कर विश्व की उन्नति करने के लिए एक समाधान-उन्मुख, अध्यात्म से प्रेरित एवं सच्चा दृष्टिकोण देनेवाले योगी भी हैं। आधुनिक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए वेद, गीता और योग के शाश्वत ज्ञान के क्रियात्मक प्रयोग करने में अग्निवीर अपनी विशेषता रखता है। अग्निवीर द्वारा बड़े पैमाने पर व्यक्तियों के जीवन में लाए गए परिवर्तन की गवाही ऐसे हज़ारों लोगों के बयान हैं, जो कभी सामाजिक अन्याय के दबाव में आकर आत्महत्या करने की कगार पर थे, नैराश्य से लड़ रहे थे या जीवन से भ्रमित थे।

अग्निवीर अनेक उपेक्षित, अप्रिय किन्तु महत्वपूर्ण मुद्दों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने में सफल रहा है। अग्निवीर भारत में सामाजिक समता का अग्रणी समर्थक है। अपने उपक्रम 'दलित यज्ञ' द्वारा जाति भेद और लिंग भेद की दीवारों को तोड़ने में अग्निवीर की प्रमुख भूमिका रही है।

मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों की मुहिम चलाने में अग्निवीर अगुवा रहा है, जिसमें हमें मतान्ध रूढ़िवादियों द्वारा घोर प्रतिकार का सामना करना पड़ा है।

अग्निवीर हलाला, सेक्स-गुलामी, बहुविवाह, तीन तलाक एवं लव--जिहाद जैसे घृणित अत्याचारों का पर्दाफाश कर उनके ख़िलाफ़ जनजागृति लाने में सफल रहा है।

अग्निवीर की महिला हेल्पलाइन ऐसे कई मामलों को सुलझाकर अब तक अनेकों चेहरों पर मुस्कुराहट ला चुकी है।

अग्निवीर ने देश के संवेदनशील हिस्सों में आत्मरक्षा के लिए बिना हथियार लड़ने के प्रशिक्षण का प्रारंभ किया हुआ है, जिनसे ऐसी निपुण टीमों का निर्माण किया जा रहा है जो कि अपराधियों से कमज़ोरों की रक्षा करने में सक्षम हैं।

मतान्धता और आतंक के रास्ते पर भटक चुके अनेक युवाओं को समाज की मुख्यधारा में वापस जोड़ने में अग्निवीर को जबरदस्त सफलता हासिल हुई है। अग्निवीर डी-रेडीकलाईजेशन में अपना कोई सानी नहीं रखता।

अग्निवीर के शोध और इतिहास-वर्णनों ने ऐसी सार्थक हलचल उत्पन्न की है जिसने राजनैतिक दबावों के चलते पढ़ाए जाने वाले प्रचलित इतिहास की प्रामाणिकता पर प्रश्न-चिन्ह लगा दिया है।

अग्निवीर ने सामाजिक समता, जातीय समता, स्त्री-पुरुष समता, मानवाधिकार, विवादग्रस्त धार्मिक अधिकार और इतिहास जैसे विषयों के अलावा स्वयं-सहायता, हिन्दू धर्म और श्रेष्ठ जीवन यापन के तरीकों पर भी अनेक पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

अग्निवीर की पुस्तकें सरल, स्पष्ट, मौलिक, समाधान प्रस्तुत करनेवाली, क्रियात्मक, नवीन और अद्भुत ज्ञान से परिपूर्ण होने के कारण पाठकों द्वारा अत्यंत सराही गई हैं।

अपने जीवन को सम्पूर्णता के साथ जीते हुए सार्थक बनाने की इच्छा रखनेवाले प्रत्येक मनुष्य का अग्निवीर में स्वागत है, हमारी मुहिम में सहभागी बनिए।

अधिक जानकारी के लिए देखें-

वेबसाइट: http://www.agniveer.com/

फेसबुक: http://www.facebook.com/agniveeragni

यूट्यूब: http://www.youtube.com/agniveer

ट्विटर: http://www.twitter.com/agniveer

अग्निवीर का सदस्य बनने के लिए, यहां सदस्यता फॉर्म भरें:

http://www.agniveer.com/membership-form/

अग्निवीर को सहयोग प्रदान करने के लिए, यहां भुगतान करें: